अध्याय 4

(GRAMMAR)

(प्रश्न संख्या – 4 पर आधारित) निर्धारित अंक :

व्याकरण

'व्याकरण' वह विद्या है जिसके द्वारा भाषा के शुद्ध रूप में बोलने, पढ़ने और लिखने का ज्ञान होता है।

व्याकरण के विभाग

व्याकरण के निम्नलिखित तीन विभाग माने गए हैं–

1. वर्ण-विचार (ORTHOGRAPHY)
2. शब्द-विचार (ETYMOLOGY)
3. वाक्य-विचार (SYNTAX)

1. **वर्ण-विचार**–इस विभाग में वर्ण, उनके आकार, लिखने की विधि, भेद तथा उनके उच्चारण आदि पर वि किया जाता है।

2. **शब्द-विचार**–इस विभाग में शब्दों के भेद, उनकी व्युत्पत्ति, उनके मेल तथा रूपांतरण आदि पर विचार कि जाता है।

3. **वाक्य-विचार**–इस विभाग में वाक्यों की रचना, उनके भेद, वाक्यों तथा उपवाक्यों के परस्पर संबंध वाक्य-विग्रह, विराम चिह्नों आदि पर विचार किया जाता है।

वर्ण-विचार (Orthography)

भाषा की सबसे छोटी इकाई 'वर्ण' है, जिसके टुकड़े नहीं हो सकते; जैसे–अ, क्, ज्, त्, म्, न् आदि।

वर्ण ध्वनियों के उच्चरित और लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। **वर्णों के क्रमबद्ध और व्यवस्थित समूह 'वर्णमाला' कहते हैं।**

स्वर–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन–

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ		
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ		
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
तवर्ग	त	थ	द	ध	न		
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म		
अंतःस्थ	य	र	ल	व			
ऊष्म	श	ष	स	ह			

Scanned with CamScanner

अं (अनुस्वार) तथा अः (विसर्ग) 'अयोगवाह' कहलाते हैं।

इसी तरह दो-दो व्यंजनों के मेल से बने चार संयुक्ताक्षर भी हैं जो इस प्रकार हैं–

क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ, श् + र = श्र

स्वर (Vowels)

'स्वर' वह वर्ण है, जो किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना, स्वतंत्र रूप से बोला जा सके, जैसे–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वरों के भेद (Kinds of Vowels)

उच्चारण में लगने वाले समय की दृष्टि से स्वरों के दो भेद हैं–

1. ह्रस्व स्वर (Short Vowels),

2. दीर्घ स्वर (Long Vowels)

1. ह्रस्व स्वर–वे स्वर हैं जिनके उच्चारण में कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है। अ, इ, उ तथा ऋ ये चार ही ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर–वे स्वर हैं जिनके उच्चारण में ह्रस्व की तुलना में अधिक समय (दो मात्रा का समय) लगता है। ये स्वर सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

व्यंजन (Consononts)

जो वर्ण स्वरों की सहायता के बिना न बोले जा सकें, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं; जैसे–क, ख, ग, घ आदि।

व्यंजनों के तीन भेद हैं–

1. स्पर्श (Mute Consonants)

2. अंत:स्थ (Semi-Vowels)

3. ऊष्म (Sibilants)

1. स्पर्श व्यंजन–'क' से 'म' तक पच्चीस वर्ण 'स्पर्श व्यंजन' कहलाते हैं। ये पाँच वर्गों–कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग में विभक्त किए गए हैं।

2. अंत:स्थ व्यंजन–य, र, ल, व 'अंत:स्थ व्यंजन' कहलाते हैं।

3. ऊष्म व्यंजन–श, ष, स, ह, 'ऊष्म व्यंजन' कहलाते हैं। इनको ऊष्म इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इनके उच्चारण में श्वास की प्रबलता के कारण एक प्रकार की गरमी (ऊष्मा) उत्पन्न होती है।

इन तैंतीस व्यंजनों के अतिरिक्त ड़, ढ़ तथा चार 'संयुक्त व्यंजन'–क्ष, त्र, ज्ञ, श्र भी हैं, जो दो-दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं।

Scanned with CamScanner

शब्द-विचार

वर्णों के सार्थक समूह को 'शब्द' कहते हैं।
जैसे-भ् + ओ + ज् + अ + न् + अ + भोजन

शब्दों के भेद (Kinds of Words)

1. अर्थ की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं–

(क) सार्थक (ख) निरर्थक

(क) सार्थक शब्द–जिन शब्दों से किसी अर्थ का बोध हो, वे 'सार्थक शब्द' कहलाते हैं। जैसे-
भागना, मेज आदि।

(ख) निरर्थक शब्द–जिन शब्दों का कोई अर्थ न हो, वे 'निरर्थक शब्द' कहलाते हैं। ऐसे शब्द
किसी विशेष आवाज के सूचक होते हैं, जैसे-चर्र, चूँ, खटर आदि। व्याकरण में केवल सार्थक
का ही अध्ययन किया जाता है।

2. व्युत्पत्ति (बनावट) की दृष्टि से शब्दों के तीन भेद हैं–

(क) रूढ़ (ख) यौगिक (ग) योगरूढ़।

(क) रूढ़ शब्द–जिन शब्दों के खंड न किए जा सकें और यदि खंड कर भी दिए जाएँ, तो उनका
अर्थ न निकले, वे 'रूढ़' शब्द कहलाते हैं।

जैसे-घोड़ा, मोर, काला आदि। इन शब्दों के खंडों (घो + ड़ा, मो + र, का + ला) का अलग-
कोई अर्थ नहीं है।

(ख) यौगिक शब्द–जो दो या दो से अधिक शब्दों अथवा शब्दांशों के मेल से बने हों, वे 'यौगिक
होते हैं। इनके शब्दांश सार्थक होते हैं।

जैसे-देवालय = देव + आलय, पाठशाला = पाठ + शाला।

(ग) योगरूढ़ शब्द–जो शब्द यौगिक होने पर भी किसी सामान्य अर्थ को प्रकट न करके रूढ़ शब्दों
समान किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, वे 'योगरूढ़' कहलाते हैं। जैसे-पंकज = पंक + ज
(कमल), संसद = सम् + सद = (संसद)।

3. स्रोत के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं–

(क) तत्सम (ख) तद्भव (ग) देशी (घ) विदेशी

(क) तत्सम–तत्सम का शाब्दिक अर्थ है तत् = उसके, सम = समान अर्थात् उस (संस्कृत भाषा) के
अतः तत्सम शब्द संस्कृत के हैं और मौलिक रूप में, बिना परिवर्तन के हिंदी में प्रयुक्त होते
जैसे-सूर्य, गृह, आम्र, अग्नि आदि।

(ख) तद्भव–ये शब्द संस्कृत शब्दों के विकृत रूप हैं और ये इसी रूप में हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते
हैं। जैसे-सूरज, घर, आम, आग आदि।

Scanned with CamScanner

(ग) देशी (देशज)–इस वर्ग के शब्दों का संस्कृत शब्दों से कोई संबंध नहीं है। ये शब्द भारत की भिन्न-भिन्न प्रांतीय भाषाओं से अथवा आदिम निवासियों की भाषाओं में से हिंदी में आए हैं। जैसे-पगड़ी, खिचड़ी, लोटा, खाट आदि।

(घ) विदेशी–ये वे शब्द हैं, जो विदेशी भाषाओं से हिंदी में आ गए हैं। जैसे-कार, बैंक, औरत, कुली, स्टेशन, स्कूल आदि।

प्रयोग के विचार से शब्दों के दो मुख्य भेद हैं–

(क) विकारी (Declinable)

(ख) अविकारी (Indeclinable)

(क) विकारी शब्द–विकारी वे शब्द हैं, जिनके रूप लिंग, वचन और कारक के आधार पर बदल जाते हैं। जैसे-लड़का-लड़के, मैं-मेरा, अच्छा-अच्छी आदि।

(ख) अविकारी शब्द–अविकारी वे शब्द हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन और कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं आता अर्थात् इनका रूप सदा एक-सा रहता है। जैसे-यहाँ, वहाँ, प्रतिदिन, बिना, परंतु आदि।

प्रयोग के आधार पर शब्दों के आठ भेद हैं–

विकारी–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया

अविकारी–क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक

1. संज्ञा–किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं। जैसे-राम, दिल्ली, किताब, फल, मिठास, सुंदरता आदि।
2. सर्वनाम–वे शब्द हैं, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। जैसे-वह, तू, कोई, कौन आदि।
3. विशेषण–वे शब्द हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं। जैसे-काला, सुंदर, लंबा, मधुर, पीला आदि।
4. क्रिया–वे शब्द हैं, जिनसे किसी काम का करना या होना प्रकट हो। जैसे-पढ़ना, जाना, रोना, दौड़ना, बैठना आदि।
5. क्रियाविशेषण–वे शब्द हैं, जो क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं। जैसे-शीघ्र, धीरे-धीरे आदि।
6. संबंधबोधक–वे शब्द हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ संबंध बताते हैं। जैसे-तक, साथ, नीचे आदि।
7. समुच्चयबोधक–वे शब्द हैं, जो विभिन्न पदों, वाक्यों अथवा वाक्य खंडों को जोड़ते हैं। जैसे-और, एवं, पर आदि।
8. विस्मयादिबोधक–वे शब्द हैं, जो बोलने वाले के मन के भाव–आश्चर्य, प्रसन्नता, दुख, घृणा आदि को प्रकट करते हैं। जैसे-आह, धिक्, अरे, हाय, छिः आदि।

Scanned with CamScanner

मानक वर्तनी

हिंदी में कुछ वर्णों के दो-दो रूप प्रचलित हैं, जिनमें से एक को 'मानक' तथा दूसरे को 'अमानक' माना गया है। मानक वर्तनी से संबंधित कुछ सामान्य नियमों की जानकारी नीचे दी जा रही है–

ऐसे वर्ण जिनके मध्य या अंत में खड़ी पाई (।) का प्रयोग नहीं होता। (जैसे–ट, ठ, द, ड, ढ, ह) इनसे संयुक्त वर्ण बनाने के लिए इन वर्णों के नीचे हल चिह्न (्) लगा दिया जाता है। जैसे–

ट् + ट = ट्ट	ठ् + य = ठ्य	ड् + ड = ड्ड	द् + द = द्द
द् + म = द्म	द् + य = द्य	द् + व = द्व	ह् + न = ह्न
ह् + व = ह्व	ह् + ल = ह्ल	ह् + म = ह्म	ह् + य = ह्य

विशेष

पहले इस प्रकार के वर्णों के संयुक्त रूपों को हल चिह्न लगाकर नहीं लिखा जाता था, जैसे–ट् + ट = ट्ट, ड् + ड = ड्ड, द् + द = द्द, द् + य = द्य, द् + व = द्व, द् + ध = द्ध, ह् + न = ह्न, ह् + ल = ह्ल आदि। केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने इन वर्णों के संयुक्त रूपों को (हल चिह्न लगाकर) लिखने की संस्तुति की है; अतः विद्यार्थियों को नए रूप का अभ्यास करना चाहिए।

- इसी प्रकार क् + त को 'क्त' लिखने की बजाए 'क्त' लिखा जाने लगा है।
- त् + त को पहले 'त्त' रूप में लिखा जाता था, पर आजकल 'त्त' रूप में लिखा जाता है।
- द् + य को पहले 'द्य' रूप में लिखा जाता था, पर अब 'द्य' रूप में लिखा जाता है।
- हल चिह्नों से युक्त वर्णों में 'इ' की मात्रा (ि) का प्रयोग करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। ऐसे संयुक्त वर्ण से बनने वाले शब्दों में 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन से तत्काल पूर्व किया जाता है, पूरे युग्म (जोड़े) के साथ नहीं,

गलत प्रयोग	सही प्रयोग	गलत प्रयोग	सही प्रयोग
पट्टियाँ	पट्टियाँ	गद्दियाँ	गद्दियाँ
बुद्धि	बुद्धि	द्वितीय	द्वितीय

- विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्दों से अलग पर सर्वनाम शब्दों के साथ मिलाकर लिखे जाने चाहिए; जैसे–राम ने, पुस्तक पर, मैंने, उसको आदि।
- यदि सर्वनाम शब्दों के साथ दो विभक्ति चिह्नों का प्रयोग हुआ है, तो पहला विभक्ति चिह्न सर्वनाम के साथ मिलाकर और दूसरा अलग से लिखा जाए। जैसे–उसके लिए, उनमें से आदि।
- पूर्वकालिक क्रियाएँ एक शब्द के रूप में मिलाकर लिखी जाएँ। जैसे–खाकर, पढ़कर आदि।
- से, सा, जैसा आदि शब्द यदि गुणों की समानता प्रकट करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं, तो उनमें योजक चिह्नों का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। जैसे–अर्जुन-सा वीर आदि।

Scanned with CamScanner

- द्वंद्व समास शब्द युग्मों तथा पुनरुक्त शब्दों के बीच में योजक चिह्न प्रयोग करना चाहिए। जैसे- माता-पिता, घर-घर।
- जिन स्थलों पर 'य' और 'व' का प्रयोग विकल्प के रूप में होता है, वहाँ केवल स्वर रूपों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे-'किये' के स्थान पर 'किए', 'खाये' के स्थान पर 'खाए', 'नयी' के स्थान पर 'नई', 'हुवा' के स्थान पर 'हुआ'।

'स्थायी' के स्थान पर 'स्थाई', 'दायित्व' के स्थान पर 'दाइत्व' का प्रयोग अशुद्ध है।

'ट' वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) तथा 'ऋ' के साथ प्रायः 'श' के स्थान पर 'ष' का ही प्रयोग होता है। जैसे- कष्ट, निष्ठा, कृष्ण, ऋषि आदि।

- यदि 'क, ख, प, फ, ट और ठ' वर्णों से पहले विसर्ग का प्रयोग हुआ हो, वह विसर्ग 'ष' में बदल जाता है। जैसे- निः + पाप = निष्पाप, निः + कलंक = निष्कलंक, निः + फल = निष्फल आदि।
- 'च' और 'छ' से पहले 'श्' का ही प्रयोग होता है। जैसे-निश्चय, निश्छल आदि।
- 'निस्' और 'दुस्' उपसर्गों के साथ 'ष्' का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे-निस् + पाप = निष्पाप, दुस् + कर्म = दुष्कर्म आदि।
- तत्सम शब्दों में जहाँ 'श' और 'ष' दोनों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ पहले 'श' और बाद में 'ष' आता है। जैसे-विशेष, आशीष, शोषण आदि।
- हिंदी में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्दों के दो-दो रूप प्रचलित हैं तथा दोनों को ही शुद्ध मान लिया गया है। जैसे-गरदन = गर्दन, बरफ़ = बर्फ़, कुरसी = कुर्सी, सरदी = सर्दी, बर्तन = बरतन, दुकान = दुकान, बिल्कुल = बिलकुल आदि।
- हिंदी में अरबी, फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी के अनेक शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। इनमें से अनेक शब्दों का हिंदी रूपांतर हो चुका है जैसे 'ग़रीब' के स्थान पर 'गरीब', 'क़त्ल' के स्थान पर 'कत्ल' लिखा जाने लगा है अर्थात् अरबी-फ़ारसी के शब्दों के नीचे लगे बिंदु (नुक्ता) लिखने की परंपरा का लोप होता जा रहा है, परंतु जब नुक्ते के प्रयोग से शब्द के अर्थ में ही भिन्नता आ जाए, तो उसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। जैसे-राज (शासन) राज़ (रहस्य), सजा (सजाना) सज़ा (दंड)।

यही स्थिति अंग्रेज़ी की ध्वनि 'ऑ' के प्रयोग के संबंध में भी है। 'ऑ' ध्वनि का प्रयोग भी केवल उसी स्थिति में किया जाए जब इसके प्रयोग से शब्द का अर्थ ही बदल रहा हो। जैसे-काल (समय) कॉल (बुलाना), डाल (शाखा) डॉल (गुड़िया)।

अनुनासिक तथा अनुस्वार के प्रयोग में भी सावधानी बरतनी चाहिए। जैसे-हंस (एक पक्षी) हँस (हँसना-क्रिया)

'ड़' और 'ढ़' में भी इनके नीचे बिंदु का प्रयोग किया जाता है। 'ड़' और 'ढ़' ध्वनियाँ कभी शब्द के आरंभ में नहीं आतीं। 'रि' और 'ऋ' की मात्रा (ृ) के प्रयोग में भी सावधानी बरतनी चाहिए। जैसे-'रिपु' को 'ऋपु' तथा 'ऋषि' को 'रिषि' लिखना अशुद्ध है।

आजकल संयुक्त व्यंजन के रूप में प्रत्येक वर्ग के पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म्) के स्थान पर अनुस्वार (ं) लगाया जाने लगा है। जैसे-'गङ्गा' के स्थान पर 'गंगा', 'चञ्चल' के स्थान पर 'चंचल', 'घण्टा' के स्थान पर 'घंटा', 'हिन्दी' के स्थान पर 'हिंदी' तथा 'सम्वाद' के स्थान पर 'संवाद' आदि।

Scanned with CamScanner

विकारी शब्द

1. संज्ञा

किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु अथवा भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं। जैसे–राम, मुन्ना, टोकरी, मिठास आदि।

संज्ञा के भेद

हिंदी में संज्ञा के तीन भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)
2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)
3. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा– जिस संज्ञा से किसी विशेष व्यक्ति, विशेष स्थान अथवा विशेष वस्तु का बोध होता है, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं।** जैसे–यमुना, हिमालय, दिल्ली, जवाहरलाल, ताजमहल, रामायण, बाइबल, गीतांजलि।
2. **जातिवाचक संज्ञा–जिस संज्ञा से किसी एक जाति के सभी पदार्थों अथवा प्राणियों का ज्ञान हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं।** जैसे–बालिका, मोर, घोड़ा, नगर, पुस्तक, महिला आदि।
3. **भाववाचक संज्ञा–जिस संज्ञा से किसी के गुण, दोष, भाव या दशा का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं।** जैसे–बचपन, मधुरता, सत्य, सुंदरता, नीचता, जवानी, नम्रता, सज्जनता आदि।

अंग्रेजी व्याकरण के प्रभाव से कुछ विद्वान संज्ञा के दो भेद और मानते हैं–

- समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा
- द्रव्यवाचक संज्ञा
- **समुदायवाचक संज्ञा–ये वे शब्द हैं, जो किसी समुदाय का बोध कराते हैं।** जैसे–सेना, सभा, कक्षा, मंडली आदि।
- **द्रव्यवाचक संज्ञा–ये वे शब्द हैं, जो किसी द्रव्य (पदार्थ) का नाम बताते हैं।** जैसे–सोना, लोहा, पानी, तेल आदि।

संज्ञाओं का रूप-परिवर्तन (Declension of Nouns)

संज्ञा विकारी शब्द है। संज्ञा के रूप तीन कारणों से बदलते हैं–

1. लिंग (Gender) से
2. वचन (Number) से
3. कारक (Case) से.

Scanned with CamScanner

1. लिंग (Gender)

हिंदी भाषा में दो ही लिंग माने जाते हैं–

(क) पुल्लिंग (Masculine) (ख) स्त्रीलिंग (Feminine)

(क) पुल्लिंग से पुरुष जाति का बोध होता है। जैसे– राम, हाथी, बालक, शेर, आलू, पंडित, पिता, भाई आदि।

(ख) स्त्रीलिंग से स्त्री जाति का बोध होता है। जैसे– गाय, मोरनी, बालिका, वर्षा, औरत, कुर्सी, मछली, माता, बहन आदि।

लिंग-परिवर्तन (Change of Gender)

1. अकारांत तथा आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'अ' अथवा 'आ' को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ई' कर दिया जाता है। जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
देव	देवी	नट	नटी
बेटा	बेटी	दादा	दादी
घोड़ा	घोड़ी	पुत्र	पुत्री

2. कुछ आकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'आ' को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'इया' कर दिया जाता है तथा पहले स्वर को ह्रस्व कर दिया जाता है। जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कुत्ता	कुतिया	बेटा	बिटिया
बूढ़ा	बुढ़िया	चूहा	चुहिया
डिब्बा	डिबिया	गुड्डा	गुड़िया

3. व्यवसायसूचक पुल्लिंग शब्दों के अंतिम स्वर को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'इन' कर दिया जाता है। जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुनार	सुनारिन	तेली	तेलिन
लुहार	लुहारिन	धोबी	धोबिन
कुम्हार	कुम्हारिन	माली	मालिन

4. पदवीवाचक या उपजातिवाचक शब्दों के अंत में स्वर को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'आइन' कर दिया जाता है। जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पंडित	पंडिताइन	लाला	ललाइन
ठाकुर	ठकुराइन	चौधरी	चौधराइन

Scanned with CamScanner

5. कुछ अकारांत शब्दों के अंत में 'आनी' लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं। जैसे-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
जेठ	जेठानी	नौकर	नौकरानी
देवर	देवरानी	मुगल	मुगलानी

6. कुछ अकारांत शब्दों के अंत में 'नी' लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं। जैसे-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ऊँट	ऊँटनी	शेर	शेरनी
भील	भीलनी	सिंह	सिंहनी

7. कुछ शब्दों के अंत में 'ई' को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'इनी' कर दिया जाता है। जैसे-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
स्वामी	स्वामिनी	हाथी	हथिनी
तपस्वी	तपस्विनी	हंस	हंसिनी

8. 'आन' अंत वाले शब्दों में 'आन' के स्थान पर स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'अती' कर दिया जाता है। जैसे-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
धनवान	धनवती	बलवान	बलवती
गुणवान	गुणवती	बुद्धिमान	बुद्धिमती

9. 'अक' अंत वाले शब्दों के 'अक' को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'इका' कर दिया जाता है। जैसे-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नायक	नायिका	सेवक	सेविका
अध्यापक	अध्यापिका	याचक	याचिका
लेखक	लेखिका	बालक	बालिका

10. अकारांत 'तत्सम' शब्दों में अंतिम 'अ' को स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'आ' कर दिया जाता है। जैसे-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुत	सुता	प्रिय	प्रिया
बाल	बाला	शूद्र	शूद्रा

Scanned with CamScanner

'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दाता	दात्री	नेता	नेत्री
कर्ता	कर्त्री	भर्ता	भर्त्री
अभिनेता	अभिनेत्री	रचयिता	रचयित्री
विधाता	विधात्री	प्रबंधकर्त्ता	प्रबंधकर्त्री

कई शब्दों के स्त्रीलिंग रूप उनके पुल्लिंग रूपों से बिलकुल भिन्न होते हैं। जैसे–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
राजा	रानी	कवि	कवयित्री
बैल	गाय	वर	वधू
पुरुष	स्त्री	ससुर	सास
विद्वान	विदुषी	वीर	वीरांगना
विधुर	विधवा	ननदोई	ननद
बहनोई	बहन	सम्राट	सम्राज्ञी
साधु	साध्वी	युवक	युवती
साला	सलहज	बुआ	फूफा

कुछ शब्दों में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग का अंतर करने के लिए 'मादा' या 'नर' जोड़ दिया जाता है। जैसे–'मादा नर मक्खी' आदि।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नर कोयल	मादा कोयल	नर तोता	मादा तोता
नर मगरमच्छ	मादा मगरमच्छ	नर भेड़िया	मादा भेड़िया
नर खरगोश	मादा खरगोश	नर कौआ	मादा कौआ
नर चीता	मादा चीता	नर मक्खी	मादा मक्खी

कुछ शब्द सदा पुल्लिंग होते हैं। जैसे– मच्छर, खटमल, चीता, बिच्छू, गरुड़, कछुआ, बाज, गैंडा, खरगोश, बैल आदि।

कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे– मक्खी, गिलहरी, मैना, तितली, मछली, दीमक, कोयल आदि।

नदियों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे–गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि। ब्रह्मपुत्र अपवाद

Scanned with CamScanner

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के भाववाचक रूप लिखिए –
[illegible]

2. निम्नलिखित शब्दों के गुणवाचक रूप लिखिए –
[illegible]

3. दिए गए शब्दों के भाववाचक शब्दों को संकेत लिखिए –
(क) [illegible]
(ख) [illegible]
(ग) [illegible]
(घ) [illegible]
(ङ) [illegible]
(च) [illegible]
(छ) [illegible]
(ज) [illegible]
(झ) [illegible]
(ञ) [illegible]

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

भाववाचक संज्ञाएँ [illegible] बनाई जाती हैं। ये संज्ञाएँ जातिवाचक, विशेषण तथा क्रियाओं से ई, त्व, ता, पन, या, आवट, आहट, ट आदि प्रत्यय लगाकर बनाई जाती हैं। जैसे –

शब्द		प्रत्यय		भाववाचक संज्ञा
[illegible]	+	ई	=	लंबाई
प्रभु	+	ता	=	प्रभुता
साधु	+	पन	=	साधुपन
गोपाल	+	या	=	गोपालाई
गोरा	+	पन	=	गोरापन
सजना	+	आवट	=	सजावट
घबरा	+	आहट	=	घबराहट
पंडित	+	ई	=	पंडिताई

(क) संज्ञा शब्दों से बनने वाले भाववाचक संज्ञाएँ

संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] (ICSE 2005)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] (ICSE 2007)	[illegible]	[illegible] (ICSE 2006)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] (ICSE 2010)	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] (ICSE 2005, 06)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] (ICSE 2006)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible] / [illegible] (ICSE 2005)	[illegible]	[illegible] (ICSE 2006)
[illegible]	[illegible]		

(ख) सर्वनाम से

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] (ICSE 2006)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] (ICSE 2006)
[illegible]	[illegible]		

Scanned with CamScanner

(ग) विशेषण शब्दों से

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
आवश्यक	आवश्यकता
आलसी	आलस्य
उचित	औचित्य
एक	एकता
दुष्ट	दुष्टता
दुर्बल	दुर्बलता / दौर्बल्य
विवश	विवशता
निर्बल	निर्बलता
निर्भय	निर्भयता
कम	कमी
कठिन	कठिनता / कठिनाई
कायर	कायरता
कृतज्ञ	कृतज्ञता
अच्छा	अच्छाई
ईर्ष्यालु	ईर्ष्या
ऊँचा	ऊँचाई
कड़वा	कड़वाहट
दीर्घ	दीर्घता
वीर	वीरता
नीच	नीचता
न्यून	न्यूनता
काला	कालापन / कालिमा
कठोर	कठोरता
नपुंसक	नपुंसकता
प्यासा	प्यास
पागल	पागलपन
पूर्ण	पूर्णता *[ICSE 2008]*
कृपण	कृपणता
कुशल	कुशलता
कंजूस	कंजूसी
खट्टा	खटास / खटाई

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बेईमान	बेईमानी
गंभीर	गंभीरता / गांभीर्य
गुरु	गुरुता / गुरुत्व
चतुर	चतुराई / चातुर्य
ठंडा	ठंडक / ठंड
ढीठ	ढिठाई
निपुण	निपुणता / नैपुण्य
मस्त	मस्ती
मोटा	मोटापा
सफल	सफलता
मांसल	मांसलता
युवा	यौवन
सफ़ेद	सफ़ेदी
लंबा	लंबाई
हरा	हरियाली
शांत	शांति
वृद्ध	वार्धक्य / वृद्धत्व
चिकना	चिकनाहट
मीठा	मिठास
बुरा	बुराई *[ICSE 200*[illegible]
बड़ा	बड़ाई, बड़प्पन
दुखी	दुख *[ICSE 200*[illegible]
बुद्धिमान	बुद्धिमत्ता
भक्त	भक्ति
भावुक	भावुकता
गहरा	गहराई
भूखा	भूख
मीठा	मिठास *[ICSE 200*[illegible]
अधिक	आधिक्य / अधिकता *[ICSE 200*[illegible]
मूर्ख	मूर्खता

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
मधुर	मधुरता / माधुर्य	समान	समानता
शुद्ध	शुद्धता	शूर	शौर्य
सुंदर	सुंदरता, सौंदर्य	विधवा	वैधव्य
मौलिक	मौलिकता	वैरी	वैर
संगी	संगति	स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता	हिंसक	हिंसा
लाल	लाली	कर्मठ	कर्मठता

(घ) क्रिया शब्दों से

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
अस्ति	अस्तित्व	चमकना	चमक
उलझना	उलझन	चूकना	चूक
उड़ना	उड़ान *[ICSE 2010]*	चलना	चाल
कमाना	कमाई	चढ़ना	चढ़ाई *[ICSE 2006]*
करना	कार्य	जीतना	जीत
खेलना	खेल	जागना	जागरण
गिरना	गिरावट	जपना	जाप
गाना	गायकी / गायन	जीना	जीवन
पूजना	पूजा / पूजन	मिलना	मिलन
घबराना	घबराहट *[ICSE 2007]*	लिखना	लिखावट / लेख
चुनना	चुनाव	मारना	मार
थकना	थकावट / थकान	लड़ना	लड़ाई
दुहराना	दुहराई	हँसना	हँसी
दौड़ना	दौड़	लजाना	लाज
पहनना	पहनावा	जलना	जलन
पीसना	पिसाई	कहना	कहावत / कथन
पहचानना	पहचान	भिड़ना	भिड़ंत
पालना	पालन	बुनना	बुनाई / बुनावट
रँगना	रँगाई	बचना	बचाव
पढ़ना	पढ़ाई	बोलना	बोली / बोल
बोना	बुवाई	बैठना	बैठक
		भूलना	भूल
		बचाना	बचत

Scanned with CamScanner

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
मिलाना	मिलावट
मुसकुराना	मुसकुराहट
मरना	मृत्यु / मरण
सीना	सिलाई

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
सजना	सजावट
रुकना	रुकावट
हारना	हार
बहना	बहाव

(ङ) अव्ययों से

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
वाह	वाहवाही
मना	मनाही
निकट	निकटता

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
समीप	सामीप्य

? अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों को भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित कीजिए–

आलसी, उचित, स्वस्थ, दूर, चालाक, नीच, बुद्धिमान, गहरा, तपस्वी, बैठना, चुनना, जपना, सजाना, समीप, मजदूर, नेता, युवक, बूढ़ा, बच्चा, सेवक।

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों को भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित कर रिक्त स्थान भरिए–

(i) आज देश में एकता की बहुत ..... है। (आवश्यक)
(ii) सभी लोग उसकी ..... का आदर करते हैं। (सज्जन)
(iii) कलक की तोतली भाषा सुनकर सभी को ..... आ गई। (हँसना)
(iv) इस झील की ..... बहुत अधिक है। (गहरा)
(v) चरित्र मानव की ..... का आधार है। (प्रतिष्ठित)
(vi) ..... को बीमारी नहीं समझना चाहिए। (बूढ़ा)
(vii) दुष्ट अपनी ..... नहीं छोड़ता। (दुष्ट)
(viii) आज हर चीज में ..... पाई जाती है। (मिलावट)
(ix) सड़क पर अपना ..... खुद करना होता है। (बचाव)
(x) ..... व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन है। (आलसी)
(xi) आपके ..... से ही यह काम संपन्न हुआ। (सहयोग)
(xii) पं. नेहरू के ..... से सब प्रभावित थे। (व्यक्ति)

Scanned with CamScanner

..... की भावना अपनाने से ही मैत्री बढ़ती है। (अपना)

आजकल के लोगों में ..... बिल्कुल नहीं है। (इंसान)

मेरा ..... ठीक नहीं रहता। (स्वस्थ)

चारों ओर ..... बिखरा पड़ा है। (सुंदर)

..... में बहकर कोई काम नहीं करना चाहिए। (भावुक)

तुम्हारे ..... को देखकर मैं चकित रह गया। (साहसी)

इस गन्ने में ..... नहीं है। (मीठा)

सागर की ..... नापना कठिन है। (गहरा)

वचन

...-शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध हो उसे 'वचन' कहते हैं।

...न के भेद-

हिंदी में वचन के दो भेद हैं–

1. एकवचन (Singular Number) 2. बहुवचन (Plural Number)।

1. एकवचन–**शब्द के जिस रूप से एक ही वस्तु, पदार्थ या प्राणी का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं।** जैसे-लड़की, घोड़ा, चिड़िया, नदी, पुरुष आदि।

2. बहुवचन– **शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं, पदार्थों, प्राणियों का बोध हो, उसे 'बहुवचन' कहते हैं।** जैसे-लड़कियाँ, घोड़े, पुस्तकें, नदियाँ आदि।

...न संबंधी महत्त्वपूर्ण नियम-

...के विषय में नीचे लिखे कुछ महत्त्वपूर्ण नियम सदैव याद रखने चाहिए–

1. **कभी-कभी आदर प्रकट करने हेतु एकवचन के स्थान पर बहुवचन क्रिया का प्रयोग किया जाता है।**
   जैसे- (*i*) महात्मा गांधी सत्य तथा अहिंसा के समर्थक थे।
   (*ii*) पिता जी कल दिल्ली जा रहे हैं।
   (*iii*) दीपावली के दिन ही श्रीराम अयोध्या लौटे थे।
2. **कुछ लोग अपना अधिकार, बड़प्पन जताने के लिए भी 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करते हैं।**
   जैसे- (*i*) हम आज ही लखनऊ से आए हैं।
   (*ii*) पिता जी ने कहा, "हमारा कोट ले आओ।"
3. **दर्शन, प्राण, बाल, आँसू, हस्ताक्षर, होश आदि संज्ञाएँ सदा बहुवचन में ही प्रयुक्त होती हैं।**
   जैसे- (*i*) आपके बाल काले और घने हैं।
   (*ii*) चाचा जी ने कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए।

Scanned with CamScanner

4. **कई बार जातिवाचक शब्द एकवचन में प्रयुक्त होता है और बहुवचन का बोध करवाता है।**

जैसे– (*i*) सेब से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

(*ii*) नारी का सम्मान करना परमात्मा का मान करना है।

(*iii*) मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है।

5. **आग, दूध, पानी, वर्षा, जनता आदि शब्द सदैव एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।**

जैसे– (*i*) गरमियों में ठंडा दूध अच्छा लगता है।

(*ii*) इस साल वर्षा अच्छी हुई है।

(*iii*) जंगल में आग लग गई है।

वचन बदलने के नियम

एकवचन से बहुवचन बनाते समय दो प्रकार के नियम सामने आते हैं–

(क) विभक्तिरहित बहुवचन बनाने के नियम

(ख) विभक्तिसहित बहुवचन बनाने के नियम

इन्हें समझने से पूर्व निम्नलिखित वाक्य ध्यानपूर्वक पढ़ें–

(*i*) खजांची रुपये गिन रहा है।
खजांची रुपयों को गिन रहा है।

(*ii*) घोड़े घास खा रहे हैं।
वे घोड़ों को घास खिला रहे हैं।

इन वाक्यों में 'रुपये', 'रुपयों' का, 'घोड़े', 'घोड़ों' का बहुवचन हैं, परंतु 'रुपये' तथा 'घोड़े' विभक्तिरहित हैं पर 'रुपयों' को, 'घोड़ों' को विभक्तिसहित हैं। इस आधार पर हम नीचे बहुवचन बनाने के दोनों नियमों पर विचार करेंगे–

(क) विभक्तिरहित बहुवचन बनाने संबंधी नियम–

(अ) पुल्लिंग शब्दों के नियम

1 **आकारांत संज्ञाओं के अंतिम 'आ' को 'ए' में बदलकर।** जैसे–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़के	केला	केले
कपड़ा	कपड़े	चीता	चीते
घड़ा	घड़े	भेड़िया	भेड़िये
बूढ़ा	बूढ़े	रुपया	रुपये
बच्चा	बच्चे	रास्ता	रास्ते
लोटा	लोटे	घोड़ा	घोड़े
बेटा	बेटे	चरखा	चरखे
छाता	छाते	दाना	दाने
तोता	तोते	पंखा	पंखे

Scanned with CamScanner

अपवाद–निम्नलिखित शब्दों के साथ यह नियम नहीं चलता–

(क) संस्कृत के कुछ आकारांत पुल्लिंग शब्दों में–भ्राता, राजा, पिता, देवता, चंद्रमा, कर्ता, अभिनेता आदि।

(ख) संबंधों की सूचना देने वाले शब्दों में–माता, नाना, चाचा, लाला आदि।

2 कुछ शब्दों के साथ लोग, गण, वृंद, वर्ग, जन, समूह आदि शब्द जोड़कर भी बहुवचन बनाए जाते हैं–

सभ्य लोग, छात्रगण, अध्यापक वृंद, अधिकारी वर्ग आदि।

3 निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों के रूप एकवचन तथा बहुवचन दोनों में ही समान रहते हैं–

	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अकारांत	बालक	बालक	मनुष्य	मनुष्य
इकारांत	मुनि	मुनि	कवि	कवि
ईकारांत	योगी	योगी	गुणी	गुणी
उकारांत	साधु	साधु	गुरु	गुरु
ऊकारांत	बाबू	बाबू	हिंदू	हिंदू
एकारांत	चौबे	चौबे	दूबे	दूबे
औकारांत	जौ	जौ		

(आ) स्त्रीलिंग शब्दों के नियम–

1 अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में अंतिम 'अ' को 'एँ' (ँ) करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें	पुस्तक	पुस्तकें
बात	बातें	कलम	कलमें
रात	रातें	झील	झीलें
बहन	बहनें	दीवार	दीवारें
सड़क	सड़कें	नहर	नहरें
पेंसिल	पेंसिलें	चाल	चालें

2 आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में अंतिम 'आ' के आगे 'एँ' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
सभा	सभाएँ	कथा	कथाएँ
कन्या	कन्याएँ	लता	लताएँ
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	महिला	महिलाएँ

Scanned with CamScanner

एकवचन	बहुवचन		बहुवचन
माता	माताएँ	भगिनी	भगिनियाँ
बालिका	बालिकाएँ	रोटी	रोटियाँ
लेखिका	लेखिकाएँ	लड़की	लड़कियाँ
लता	लताएँ	माला	मालाएँ

❸ इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'याँ' लगाकर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जाति	जातियाँ	राशि	राशियाँ
नीति	नीतियाँ	पंक्ति	पंक्तियाँ
लिपि	लिपियाँ	विधि	विधियाँ
शक्ति	शक्तियाँ	सन्धि	सन्धियाँ

❹ ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम 'ई' को 'इ' में बदलकर तथा अंत में 'याँ' लगाकर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
नदी	नदियाँ	योगी	योगियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ	स्त्री	स्त्रियाँ
सती	सतियाँ	सती	सतियाँ
डोली	डोलियाँ	थाली	थालियाँ
लहरी	लहरियाँ	नारी	नारियाँ

❺ उकारांत, ऊकारांत और औकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' लगाकर (अंतिम 'उ' ह्रस्व कर दिया जाता है।)

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
वस्तु	वस्तुएँ	वधू	वधुएँ
धेनु	धेनुएँ	वायु	वायुएँ
लता	लताएँ	गौ	गौएँ

❻ 'या' से अंत होने वाली संज्ञाओं को बहुवचन में बदलने के लिए अंत में (ँ) जोड़ा जाता है–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गुड़िया	गुड़ियाँ	कुटिया	कुटियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	चुड़िया	चुड़ियाँ
खिड़की	खिड़कियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ
पुतिया	पुतियाँ	कुंडिया	कुंडियाँ

❶ आकारांत, आकारांत और उकारांत शब्दों के अंत में 'ओं' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
घर	घरों	बेटा	बेटों
बहू	बहुओं	गेंद	गेंदों
घोड़ा	घोड़ों	मुर्गा	मुर्गों
लड़का	लड़कों	साधु	साधुओं

❷ अंतिम 'अ' तथा 'आ' को 'ओं' करके–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
माता	माताओं	गाय	गायों
योद्धा	योद्धाओं	लता	लताओं
पिता	पिताओं	गाय	गायों

❸ इकारांत तथा ईकारांत शब्दों के अंत में 'ओं' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कवि	कवियों	गाड़ी	गाड़ियों
मुनि	मुनियों	साड़ी	साड़ियों
रवि	रवियों	पत्नी	पत्नियों
व्यक्ति	व्यक्तियों	नदी	नदियों

(अंतिम 'ई' ह्रस्व 'इ' में बदल जाती है।)

❹ संबोधन के समय इकारांत अथवा ईकारांत में 'ओ' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मित्र	मित्रों	बहन	बहनों
सैनिक	सैनिकों	सखी	सखियों
मुर्गी	मुर्गियों	भाई	भाइयों

? अभ्यास

1. वचन की परिभाषा तथा भेद सोदाहरण लिखिए।
2. कौन एकवचन और बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले पाँच शब्दों के पाँच-पाँच उदाहरण लिखिए।
3. वचन बदलिए–

पुस्तक, बालिका, गुड़िया, सेना, नारी, लिपि, शक्तियाँ।

Scanned with CamScanner